हिन्दुस्तानी एकेडेमी, पुस्तकालय
इलाहाबाद

वर्ग संख्या ८१४.८

पुस्तक संख्या बाल/ज-४

क्रम संख्या ६५३४

गद्य कल्प

(दीर्घकालीन कृति–विधाओं का संकलन)

श्री ब्रजमोहन गुप्त 'इन्द्रनारायण'

कमलेश्वर प्रकाशन

गणश चौक छि (म०प्र०)

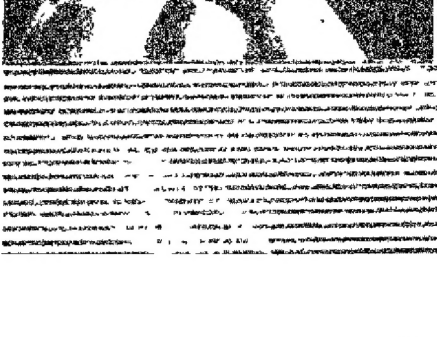

प्रथम संस्करण : १९८८

प्रकाशक :
साहित्यवाणी,
२८ पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद।

आवरण एवं सज्जा :
अशोक सिद्धार्थ

संपादक : लक्ष्मीनारायण दुबे

मूल्य : रु० ६००.००
सम्पूर्ण ग्रंथावली

मुद्रक :
पियरलेस प्रिंटर्स,
बाई का बाग, इलाहाबाद।

जिल्दबंदी :
विश्वनाथ बुक बाइंडर्स,
बैरहना, इलाहाबाद।

BALKRISHNA SHARMA 'NAVIN' GADYA RACHANAVALI
Published by SAHITYAVANI, 28, Purana Allahapur, Allahabad

Edition 1988

Edited by L.N. Dubey
Price Per set Rs. 600

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, नई दिल्ली, के आंशिक वित्तीय सहयोग से प्रकाशित

साहित्यवाणी

बालकृष्ण शर्मा नवीन

ग्रंथावली

Pratap
indi Daily.

P. O. Box 51,
Cawnpore, 7 March 1934.

नवीन जी अपने मित्र हरिशंकर विद्यार्थी, एम०एल० राय, डॉ० जवाहर लाल रोहतगी के साथ

The Pratap Office
CAWNPORE.

'प्रताप' कार्यालय
कानपुर

19/2/40

My dear Krishna,
Your letter.

I am really sorry to know that you have not been able to find your feet yet let me hope that the cloth & paint shop project will mean something & will give opportunity to your abilities

Tell dear old Jiji how awfully sad I feel sometimes to think that I have not been able to do all I could for her. My life, it appears, has been a colossal waste. And yet, I must plod on my weary way without looking back. You, of the new generation, are my best judges. And I leave it to you to pronounce your verdict upon me & my — perhaps, aimless, — activities. With respect to Rajya Dammudida, Bhabhi & Jiji & with love to children & Bahu Rani, I remain,

Your affectionate
Balkrishna

राष्ट्रीय आन्दोलन

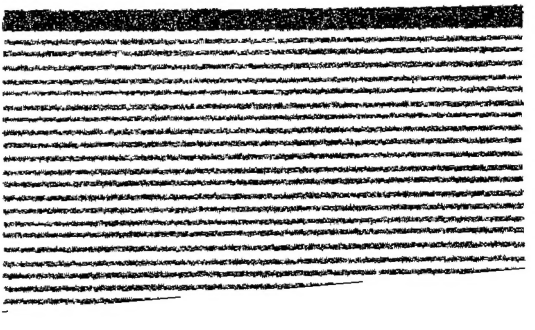

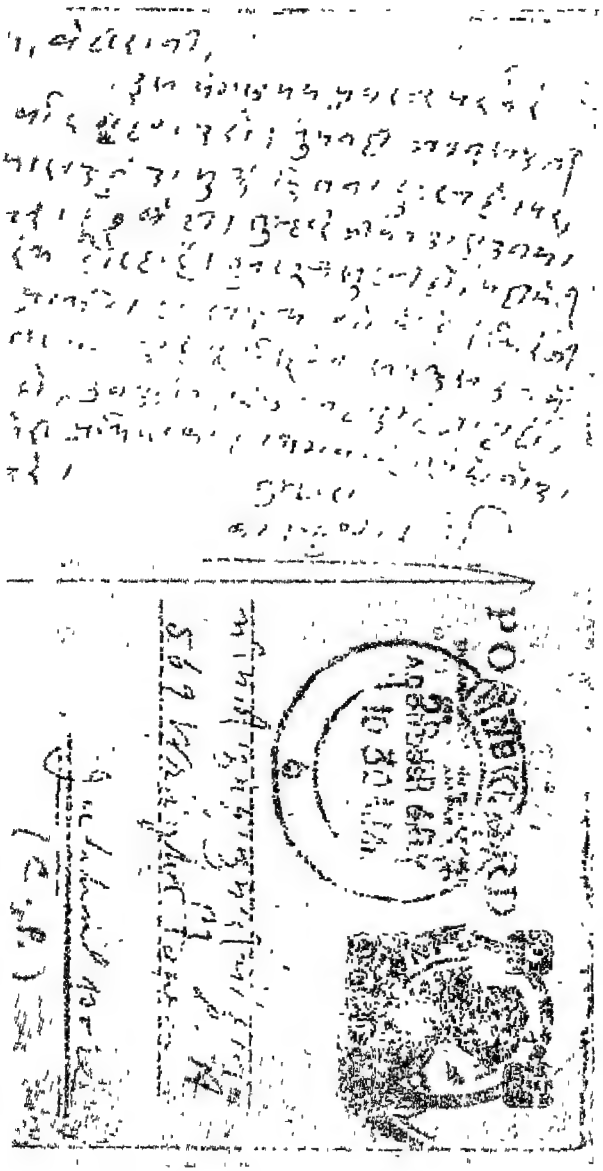

सुभद्रा कुमारी चौहान की पुत्री सुधा अमृत राय
शुभ विवाह के अवसर पर लिखा गया पत्र

अनुक्रम

प्रथम प्रकरण / राष्ट्रीय आंदोलन 17-76

रायबरेली का हत्याकाण्ड, वही दिन, बलिवेदी की ओर, स्वराज्य या मृत्यु, कस्मै देवाय हविषा विधेम ? लेखनी-संन्यास, यह हमारी लज्जा, यह हमारा अभिशाप, आखिर यह पतंगबाजी क्यो ?, जैसे नागनाथ, वैसे सापनाथ, आत्म-निर्णय का सिद्धांत, ये पुराने हथकण्डे और कुछ प्रश्न, यह हमारा प्रदर्शनात्मक क्रांतिवाद, भारतीय राष्ट्रीय क्रांति विनाश के चक्रव्यूह में, के बोले माँ ! तुमि अबले ?, तमसो मा ज्योतिर्गमय, क्या लिखूँ ?

द्वितीय प्रकरण / गौरांग महाप्रभु 77-130

वेवेल आये ! वेवेल आये ! ! लार्ड वेवेल की घोषणा, यदि वेवेल-सभा असफल हुई तो ?, शिमला-सम्मेलन की बाधाएँ, शिमला-सम्मेलन में निराशा का वातावरण, निष्ठावान देशसेवकों का भय, सावधान ! इस देश में कहीं आयरलैण्ड के इतिहास की पुनरावृत्ति न हो, निराश होने की आवश्यकता नहीं, पहाड को न ताकिये, अपनी ओर देखिये, ब्रिटिश चुनाव-परिणाम, ब्रिटेन का मंतव्य क्या है ?, ब्रिटिश शिष्टमण्डल की योजना, शिष्टमण्डल की योजना, शिष्टमण्डल-योजना का विश्लेषण।

तृतीय प्रकरण / भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 131-193

क्या कांग्रेस एक क्रांतिकारी संस्था है ?, क्या कांग्रेस-विधान और कांग्रेस-शैली को बदलने की आवश्यकता है ?, यदि कांग्रेस ने पद-ग्रहण किया

तो ? क्या कांग्रेस प्रांतीय शासन सँभाले ?, धोखे-धड़ी के कुतर्क, यह भ्रम तो दूर ही होना चाहिए, कांग्रेस-कार्य और दलगत कार्य, युक्त-प्रांतीय कांग्रेस कार्य समिति, प्रांत के कांग्रेसजनों से विनम्र निवेदन, ये चुनाव-चर्चे और कांग्रेस, कांग्रेस-नेतृत्व के विरुद्ध ये विष उगलने वाले कांग्रेस समाजवादी नेताओं के मदमत्त भाषण, देखें तो आप ध्यान से किंचित् समीप से, इस घर को आग लग रही है घर के ही दीप से, यही समय है, कांग्रेस के ध्येय में परिवर्तन कीजिये, कांग्रेस मर जाय अथवा जीवित रहे ?, क्या कांग्रेस को निर्वाण प्राप्त कर लेना चाहिए ?

चतुर्थ प्रकरण / हिन्दू और हिन्दू महासभा 193-205

हिन्दू महासभा सावधान !, हिन्दू महासभा और हिन्दू जाति से नम्र निवेदन, हिन्दू जाति इन कोढ़ियों की दुर्गन्ध-भरी मनोवृत्ति देखे !

पंचम प्रकरण / मुसलमान बंधु और मुस्लिम लीग 206-218

मुसलमान भाइयों की खिदमत में, आगामी चुनाव और मुस्लिम-समस्या, मुस्लिम लीग वालों से एक निवेदन, मुसलमान-बंधु भारत राष्ट्र से भागने की क्यों सोचें ?

षष्ठ प्रकरण / मजदूर-संगठन 219-253

मजदूर-संगठन और कांग्रेस, मजदूरों की समस्याएँ और संगठन कार्य-शैली, मजदूर भाई सावधान हो जायें, देशद्रोहियों की घातक करतूतें, हमारी मजदूर समस्या और उसकी उलझनें, उद्योगपतियों की सेवा में निवेदन, औद्योगिक क्रांति पुनः कैसे स्थापित हो ?, मजदूर-समस्या और उसका सुलझाव, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस : एक सामयिक आवश्यकता !

सप्तम प्रकरण / साम्प्रदायिक सद्भाव 254-269

बांध के !, साम्प्रदायिक दंगों की संभावना, ये साम्प्रदायिक नहीं, ये तो राजनैतिक दंगे हैं, मानव का भेड़िया बन जाना ही क्या कल्याणकर है ?

अष्टम प्रकरण / साम्यवादी 270-284

हिन्दुस्तान का कम्युनिस्ट दल, उन्होंने उत्तर देने का प्रयत्न किया, कम्युनिस्टों के हथकण्डे, आपने अपनी अम्मा को पीटना कब से छोड़ दिया ?

नवम प्रकरण / राजनैतिक समस्याएँ 285-344

क्या मंत्रिमण्डल बनाना लाभदायक है ?, पाकिस्तान : एक अडंगेबाजी, देशद्रोहियों की नीचता, आगामी चुनाव की राजनैतिक समस्याएँ, भारतीय राजनीति का प्रवाह, जालौन के जिलाधीश बचपना न करें !, स्वतंत्र भारत सेना और सरकारी नीति, क्या यह निर्बन्ध एवं निष्पक्ष चुनाव है ?, स्पष्ट दर्शन-सामर्थ्य की आवश्यकता, वर्तमान राजनैतिक समस्याएँ और उलझनें, क्या आप-हम-सब अखण्ड भारत में आस्था रखते है ?, हिन्दुस्तान-पाकिस्तान-पठानिस्तान, संयुक्त प्रांत को टुकड़े-टुकड़े करने की बात, ये नवाबी के सपने, लार्ड माउण्टबैटन ही बड़े लाट क्यों ? प्रांतीय गवर्नरों का प्रश्न, शरणार्थी समूह सावधान रहें : वह अलोकप्रिय न बनें ?

दशम प्रकरण / खाद्य-समस्या 345-362

खाद्य-वितरण-योजना सम्बन्धी कुछ विचार, यह नियंत्रण का राक्षस, किसान-संगठन की रूपरेखा कैसी हो, जनाब क्षेत्र-अन्न-नियंत्रक साहब !, यह नियंत्रण है या सीनाजोरी ? प्रादेशिक खाद्य-नियंत्रकों अर्थात् रीजनल फूड-कन्ट्रोलरों की लीलाएँ ।

एकादश प्रकरण / व्यापार-वाणिज्य 363-382

क्या विदेशी कपड़ा भारत में आ रहा है ?, हमारे मित्रों का रोष, सरकारी हुक्म—गुड़ मत बनाओ, वस्तुओं के ये बढ़े हुए मूल्य कैसे कम किये जायँ ? पाप का धन उगलवाने का प्रयत्न, चोर-व्यापार और चोर-व्यापारी ।

द्वादश : प्रकरण / विद्यार्थी-समाज 384-392

अपने वीर विद्यार्थियों से, प्रांत के विद्यार्थी सचेत हो जायँ ।

□□

परिचय - ब्रजमोहन गुप्त "इन्द्रनारायण"

- १४ मार्च, १९३७ ई० (सिहोर)
  शुक्रवार, फाल्गुन शुक्ल द्वितीया, वि० संवत [illegible]
  ७ जुलाई, १९३७ (शासकीय रिकार्ड में)

शेत
- काव्यार्चन (प्रथम काव्य-संकलन [illegible]

याँ
- एक और यात्रा (द्वितीय काव्य संकलन [illegible]
- गद्य कल्प (गद्य-विधाओं का संकलन, [illegible]
- विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित तथा आकाशवाणी इन्दौर, भोपाल एवं जबलपुर से प्रसा

पादन
- श्री जयशंकर 'प्रसाद' जन्मशती विशेषांक [illegible]
- अवैतनिक सम्पादक—'यज्ञसेनी वैश्य [illegible] (१९९० से प्रकाशन स्थगित)

म्प्रति
- व्याख्याता — कन्या शिक्षा परिसर, छिन्दवाड़ा, आदिम जाति कल्याण विभाग (म० प्र०)

वास
- साहित्य कुटीर, गणेश चौक, छिन्दवाड़ा (म० प्र०)

प्रकाशनाधीन :

यज्ञसेनी वैश्य जाति निरूपण

(यज्ञसेनी वैश्य वर्ग का उद्भव तथा विकास, इसी के अन्य वैश्य वर्गों का संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण

रूप सज्जा तथा मुद्रण [illegible]